भारत में कृषि संरचना

[AGRICULTURAL STRUCTURE IN INDIA]

कृषि का स्वभाव एवं महत्व

भारत के आर्थिक विकास में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। वास्तव में, **कृषि हमारे देश में केवल जीविकोपार्जन का साधन या उद्योग-धन्धा ही नहीं है, बल्कि अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है।** देश के उद्योग-धन्धे, विदेशी व्यापार, मुद्रा अर्जन, विभिन्न योजनाओं की सफलता एवं राजनीतिक स्थायित्व भी कृषि पर ही निर्भर हैं। एक बार स्वर्गीय **पं. जवाहरलाल नेहरू** ने कहा था कि "कृषि को सर्वाधिक प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। यदि कृषि असफल रहती है तो सरकार एवं राष्ट्र दोनों ही असफल रहते हैं।" **कृषि के महत्व को निम्नांकित तथ्यों से अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है :**

(1) **कृषि में सर्वाधिक रोजगार**—भारतीय कृषि 58 प्रतिशत जनसंख्या को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार देती है। इसके अतिरिक्त कृषि व्यवसाय में करोड़ों लोग लगे हुए हैं जो कृषि सम्बन्धी क्रियाओं में योगदान देते हैं।

(2) **राष्ट्रीय आय का मुख्य स्रोत**—कृषि का राष्ट्रीय आय में सबसे अधिक योगदान रहता है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार देश की सकल राष्ट्रीय आय में कृषि एवं उससे सम्बन्धित क्षेत्र का हिस्सा 24 प्रतिशत है।

(3) **उद्योगों का आधार**—अधिकांश महत्वपूर्ण भारतीय उद्योगों को कच्चा माल खेती से ही प्राप्त होता है, जैसे सूती वस्त्र, चीनी, चाय, कॉफी, रबड़, वनस्पति घी, तेल सभी उद्योग कच्चे माल के लिए खेती पर निर्भर हैं। लघु उद्योगों में चावल, आटा, तेल व दालें, आदि की मिलों को भी कच्चा माल कृषि से ही मिलता है।

(4) **विदेशी व्यापार में महत्व**—भारतीय कृषि का विदेशी व्यापार में भी महत्वपूर्ण स्थान है। यहां के कुल निर्यात का लगभग 18 प्रतिशत निर्यात कृषि पदार्थ तथा कृषि से सम्बन्धित कच्चे पदार्थों पर आधारित उद्योगों द्वारा किया जाता है।

(5) **खाद्यान्नों की पूर्ति**—वर्तमान खाद्यान्नों की आवश्यकताओं की लगभग शत-प्रतिशत पूर्ति भारतीय कृषि द्वारा ही की जाती है।

(6) **भूमि का सर्वाधिक उपयोग कृषि के लिए**—देश के भूमि क्षेत्रफल का सर्वाधिक भाग कृषि के काम आता है। वर्तमान में देश के 32.87 करोड़ हेक्टेअर भूमि के क्षेत्रफल में से 14.12 करोड़ हेक्टेअर भूमि पर कृषि की जाती है।

(7) **राजस्व में योगदान**—राजस्व में भी कृषि का अच्छा योगदान है। करोड़ों रुपए की आय प्रति वर्ष लगान व कृषि आय-कर से होती है। इसके अतिरिक्त, कृषि वस्तुओं के निर्यात से भी सरकार को राजस्व मिलता है।

(8) **पशुओं का चारा**—देश में 48 करोड़ पशु हैं। इनको चारा कृषि से ही प्राप्त होता है।

(9) **परिवहन साधनों का मुख्य आधार**—परिवहन साधनों—रेलों, मोटरों, बैलगाड़ियों, आदि के लिए खाद्यान्नों तथा अन्य कृषि उत्पादित वस्तुओं का लाना व ले जाना एक मुख्य आधार है। इसको इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि इनके द्वारा जो ढुलाई की जाती है उसमें कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है।

(10) **अन्तर्राष्ट्रीय महत्व**—अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भारत को महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में कृषि का उल्लेखनीय स्थान है। भारत का विश्व उत्पादन में चाय व दाल में प्रथम स्थान है जबकि गेहूं, चावल, मूंगफली, चीनी, वनस्पति, फल, सब्जी एवं जूट में दूसरा स्थान है। लाख के उत्पादन में तो भारत का एकाधिकार है।

भारतीय कृषि की मुख्य विशेषताएं

भारतीय कृषि की प्रमुख विशेषताएं निम्न प्रकार हैं :

(1) **अधिकांश जनसंख्या की आजीविका का साधन**—भारत की अधिकांश जनसंख्या की आजीविका का साधन कृषि है। यहां की कार्यशील जनसंख्या का 58 प्रतिशत कृषि से आजीविका प्राप्त करता है जिसमें से 31.7 प्रतिशत कृषक के रूप में व शेष कृषि श्रमिक के रूप में कार्य करते हैं। भारत की कुल जनसंख्या का 72.2 प्रतिशत भाग गांवों में रहता है जहां मुख्य व्यवसाय कृषि ही है।

(2) **खाद्यान्न फसलों की प्रमुखता**—भारतीय कृषि में दूसरी विशेषता यह है कि यहां पर खाद्यान्न फसलों की प्रमुखता है। यहां जितनी भूमि कृषि के काम में लायी जाती है उसका लगभग 66 प्रतिशत भाग खाद्यान्न फसलों में व शेष 34 प्रतिशत व्यापारिक फसलों के काम में लाया जाता है।

(3) **छोटी जोतें**—भारत में कृषि जोतों का आकार बहुत छोटा है। यहां की 78 प्रतिशत जोतें 2 हेक्टेअर या इससे छोटी हैं और जोतों का औसत आकार 1.55 हेक्टेअर है, जबकि विदेशों में औसत आकार इससे कई गुना है; जैसे, ऑस्ट्रेलिया 1,993 हेक्टेअर, अर्जेण्टीना 270 हेक्टेअर, कनाडा 188 हेक्टेअर, अमरीका 158 हेक्टेअर तथा ब्रिटेन 55 हेक्टेअर।

(4) **उत्पादन की परम्परागत तकनीक**—आधुनिक तकनीक के उपलब्ध होने के बावजूद भारतीय कृषि की एक विशेषता यह है कि यहां पर अधिकांश उत्पादन पुरानी परम्परागत तकनीक से होता है जिसमें खुरपी और लकड़ी के हल की ही प्रमुखता है।

(5) **निम्न कृषि उत्पादकता**—भारतीय कृषि की उत्पादकता बहुत नीची है जो कि प्रति हेक्टेअर एवं प्रति श्रमिक दोनों ही दृष्टि से कम है। भारत में एक हेक्टेअर भूमि में 2,718 किलोग्राम गेहूं पैदा होता है जबकि ब्रिटेन में 7,468 किलोग्राम पैदा होता है। इसी प्रकार भारत में प्रति श्रमिक औसत उत्पादकता 395 डॉलर है, जबकि आस्ट्रेलिया में 31,432 डॉलर, ब्रिटेन में 34,730 डॉलर, जापान में 30,620 डॉलर है।

(6) **मानसून पर निर्भरता**—भारत में 55 वर्षों के नियोजन के बाद भी मानसून पर निर्भरता में कोई विशेष कमी नहीं हुई है। अभी भी कुल कृषि भूमि का 40 प्रतिशत ही सिंचित क्षेत्र है, 60 प्रतिशत क्षेत्र मानसून पर निर्भर है। यदि वर्षा अच्छी हो जाती है तो कृषि में समृद्धि दिखायी देती है, लेकिन इसके विपरीत यदि वर्षा होती है तो खाद्यान्नों की भारी कमी दिखायी देने लगती है। इसीलिए यह कहा जाता है कि भारतीय कृषि मानसून का जुआ है।

(7) **रोजगार का अभाव**—भारतीय कृषि की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह सभी कृषकों व कृषि श्रमिकों को पूरे वर्ष भर रोजगार सुविधाएं नहीं दे पाती है। देश के विभिन्न भागों के कृषक 150 व 270 दिन तक बेकार रहते हैं। इसी कारण कहा जाता है कि कृषि में अर्ध-बेरोजगारी की समस्या है।

(8) **कम आधिक्य**—जैसा कि ऊपर कहा गया है कि भारत में कृषि जोत बहुत छोटी है, अतः किसान उतना ही उत्पादन कर पाता है जितना कि उसको अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक है। इस प्रकार उसके पास विपणन आधिक्य पर्याप्त नहीं होता है। इसी कारण कहा जाता है कि भारतीय कृषि व्यवसाय नहीं बल्कि जीविकोपार्जन का साधन है।

(9) **श्रम प्रधानता**—भारतीय कृषि में पूंजी के अनुपात में श्रम की प्रधानता है। इसका अर्थ यह है कि भारतीय कृषि श्रम-प्रधान है। इसका कारण खेतों का छोटा होना है जिससे उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है और वह पूंजीगत साधनों और कृषि उपकरणों का उपयोग नहीं कर पाता है।

(10) **राष्ट्रीय आय का मुख्य स्रोत**—राष्ट्रीय आय में कृषि एवं इससे सम्बन्धित क्षेत्र का योगदान 24 प्रतिशत है, जबकि किसी अन्य व्यवसाय श्रेणी का इतना अधिक योगदान नहीं है।